Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A Part — II (Hons)
Paper — III
नीतिशास्त्र (Ethics)

GRB BOOKS

Notes

1 पुरुषार्थ

नैतिक कर्मों के लक्ष्य को ही 'पुरुषार्थ' कहा जाता है। जिनके लिए मनुष्य की चेष्टाएँ होती हैं वे ही उसके पुरुषार्थ हैं। 'पुरुषार्थ' के लिए 'लक्ष्य' और उसकी प्राप्ति के 'साधन' दोनों को अच्छा होना चाहिए। यदि लक्ष्य अच्छा हो परन्तु उसके अपनाने के साधन खराब हो तो पुरुषार्थ का स्वरूप शुद्ध नहीं रहता है।

चार्वाक को छोड़कर हिन्दू धर्म में चार प्रकार के पुरुषार्थ माने गये हैं — (1) काम (2) अर्थ (3) धर्म (4) मोक्ष।

1. काम — काम मनुष्य का मौलिक पुरुषार्थ है। हिन्दू धर्म में काम को प्रथम पुरुषार्थ माना गया है। वात्स्यायन के अनुसार 'काम' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया गया है (i) विस्तृत अर्थ, (ii) संकुचित अर्थ।

विस्तृत अर्थ में काम शब्द का प्रयोग हमारी सारी इन्द्रियों से प्राप्त सुख के लिए होता है। जैसे- मनोहर दृश्य, माधुर्यमय संगीत आदि के अनुभव को काम कहा जाता है। अर्थात बाह्य वस्तु जो सुखद प्रतीत हो उसके अनुभव की इच्छा काम है।

संकुचित अर्थ में 'काम' शब्द का प्रयोग यौन-सुख के लिए किया जाता है। काम का अभिप्राय नर-नारी के संयोग से लिया गया है। हिन्दू धर्म में यौन सुख को अनैतिक नहीं बतलाया गया है। डॉ राधाकृष्णन के इन शब्दों

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

से- 'In Hindu religion there is nothing un whole some about the sex life' इस बात की पुष्टि होती है। यही कारण है कि हिन्दू-धर्म में देव-देवियों के भी विवाहित होने की कल्पना की गई है। विवाह को यहाँ आध्यात्मिक उन्नति का साधन माना गया है। यद्यपि हिन्दू धर्म में इन्द्रिय-सुख को भोगने का आदेश किया गया है फिर भी इनमें लिप्त रहने का आदेश नहीं दिया गया है। इसके विपरीत इन्द्रियों को नियन्त्रित करने का आदेश दिया गया है।

काम मनुष्य के संवेगात्मक जीवन को निर्दिष्ट करता है। यदि मनुष्य को उसके संवेगात्मक जीवन से वंचित कर दिया जाय तो वह आत्मनात्मक आत्म-परीक्षण का शिकार बन जाता है और निरन्तर नैतिक उत्पीड़न के दबाव में रहता है। यह स्थिति उसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए विनाशकारी होती है। अतः काम को मानवीय जीवन का लक्ष्य मानना पूर्णतः उचित युक्त है।

अर्थ — जब मनुष्य के कर्मों का लक्ष्य धन या सम्पत्ति की प्राप्ति हो तो उसे अर्थ कहा जाता है। अर्थ को पुरुषार्थ के मध्य में दूसरा स्थान दिया गया है। अर्थ पर केवल मानव का सुख ही निर्भर नहीं करता है बल्कि उसका जीवन भी निर्भर करता है। अतः

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

पुरुषार्थ की श्रेणी में काम की अपेक्षा अर्थ ही महत्वपूर्ण है। भर्तृहरि ने अर्थ की महत्ता बतलाते हुए कहा है कि धनी व्यक्ति ही कुलीन ज्ञानी, पंडित गुणी वक्ता तथा सुन्दर माना जाता है। इसीलिए अर्थ जैसी महत्वपूर्ण वस्तु की प्राप्ति को जीवन का ध्येय माना गया है। कहा गया है— धनात् धर्म ततः सुखम्।

यद्यपि हिन्दू-धर्म में अर्थ को पुरुषार्थ माना गया है फिर भी धन के संचय की अनुमति नहीं दी गई है। महाभारत में कहा गया है कि आवश्यकता से अधिक धन सन्चय करने वाला व्यक्ति पाप का भागी है। अशुभ साधनों से अर्थ का उपार्जन करना भी वर्जित बतलाया गया है।

ऽ. धर्म :— धर्म का अर्थ है धारण करने योग्य कर्म। अतः जब मनुष्य नैतिक कर्मों के आचरण की इच्छा करता है। तो उसे धर्म कहते हैं। सामाजिक एवं पारलौकिक दृष्टि से धर्म का पुरुषार्थों में महत्वपूर्ण स्थान है। धर्म के अभाव में न सुव्यवस्थित समाज का निर्माण हो सकता है और न पारलौकिक सुख की कल्पना की जा सकती है।

धर्म हमारे पारलौकिक आनन्द का ही साधन नहीं, वरन् उन आचरणों का भी समुदाय है जिनके पालन से समाज सुसंगठित रहता है। धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध आदि

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

कुछ ऐसे धर्म हैं जिनका पालन सभी के लिए वांछनीय है। मनु के अनुसार धर्म दो प्रकार के हैं— (I) सामान्य धर्म (II) विशेष धर्म।

(I) जो धर्म सभी के लिए अनिवार्य है उन्हें सामान्य धर्म कहा जाता है जैसे — धैर्य, क्षमा, सत्य, विद्या, अक्रोध इत्यादि।

(II) विशेष धर्म प्रत्येक वर्ण एवं आश्रम के लिए अलग-अलग है। धर्म एक ऐसा लक्ष्य है जो व्यक्ति के समग्र जीवन और समाज की व्यवस्था को भद्रतापूर्ण बना देता है।

4. मोक्ष — संसार से छुटकारा और दुःख से निवृत्ति ही मोक्ष कहा जाता है। यह चौथा पुरुषार्थ है। मोक्ष को हिन्दू धर्म में चरम लक्ष्य बताया गया है। संसार दुःखपूर्ण है। जबतक मनुष्य का पुनर्जन्म होगा उसे सांसारिक दुःखों का सामना करना अनिवार्य होगा। अतः संसार से छुटकारा तथा दुःख से निवृत्ति ही मोक्ष कहा जाता है। यह निःश्रेयस भी है। इससे बढ़कर दूसरा कुछ नहीं है। सभी लक्ष्य काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष की प्राप्ति में सहायक मात्र हैं। काम, अर्थ, धर्म निःश्रेयस की प्राप्ति के साधन हैं। मोक्ष इसके विपरीत वह लक्ष्य है जो स्वयं साध्य है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

इसलिए मोक्ष को परम सुख कहा जाता है।

हिन्दू-धर्म के विभिन्न पुरुषार्थों में आवश्यक सम्बन्ध है। जीवात्मा शरीर और आत्मा का संयोजन है। शरीर से सम्बन्धित रहने के फलस्वरूप जीवात्मा ऐसे विषयों की कामना करता है जो शरीर के लिए आवश्यक है। इसी कारण जीवात्मा काम अर्थात् सुखपभोग को जीवन का प्रथम लक्ष्य मानता है। इन्द्रिय सुख को अपनाने के लिए धन की आवश्यकता महसूस होती है। इसलिए अर्थ अर्थात् धन को जीवन का लक्ष्य माना गया है। परन्तु अर्थ के उपभोग और औधपत्र के लिए मानसिक व्यवस्था की आवश्यकता है। अतः समाज के नियमों का पालन अपेक्षित हो जाता है। इसप्रकार धर्म को तीसरा पुरुषार्थ मानना आवश्यक हो जाता है। परन्तु जीवात्मा उक्त लक्ष्यों को अपनाकर भी सन्तुष्ट नहीं रह सकता है। इसका कारण है यह है कि वे अशाश्वत अर्थात् अनित्य है। इसलिए मोक्ष को ही परम पुरुषार्थ माना जाता है क्योंकि वह नित्य है।

ये चारों पुरुषार्थ मानवीय स्वभाव के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। काम मनुष्य के संवेगात्मक पहलु को अभिव्यक्त करता है। अर्थ मनुष्य के आर्थिक पहलु का प्रकाशन करता है। धर्म मनुष्य के नैतिक पक्ष को प्रस्तावित करता है। मोक्ष मानवीय स्वभाव के आध्यात्मिक पहलू का प्रतिनिधित्व करता है।

'काम' और 'अर्थ'

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes!

व्यावहारिक दृष्टिकोण से पुरुषार्थ माने गये हैं। 'धर्म' और मोक्ष को पारलौकिक दृष्टि से पुरुषार्थ माना गया है।

इस प्रकार पुरुषार्थ के यही सब लक्षण हैं।